देह को देखते हुए नही देखो
एक विदेही बाप से ही प्यार करो
दही-अभिमानी बनो तो बुद्धि स्वच्छ बने
अपने को आत्मा समझना और बाप को करना प्यार
मूंढमति करते सदा देह से प्यार
देह को ही करते रहते श्रृंगार
किसी के नाम-रूप में नही फंसना
याद के चार्ट का शौंक रखना
बुद्धि कहाँ -कहाँ भटकी टाइम वेस्ट तो नही किया
सन्तुष्टता वाले के पीछे स्वतः सब होते आकर्षित
खुशी का चेहरा चैतन्य बोर्ड बन जाता
जो बनाने वाले बाप का परिचय देता
चोट लगाने वाला चोट लगायेगा
आपका काम है अपने को बचाना

ॐ शांति
मेरा बाबा